गोस्वामी तुलसीदास (8)

जन्म : गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन् 1932 में बाँदा (उत्तर प्रदेश) जिले के राजापुर गाँव में (जन्म तिथि व जन्म स्थान दोनों अनुमानित) हुआ था।

प्रमुख रचनाएँ : रामचरितमानस, दोहावली, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामाज्ञा-प्रश्न आदि इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

निधन : इनका देहावसान सन् 1623 में काशी में हुआ था।

साहित्यिक विशेषताएँ : भक्तिकाल की सगुण काव्य-धारा में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास में भक्ति से कविता लिखने की प्रक्रिया की सहज वृत्ति है, किंतु उनकी भक्ति इस हद तक लोकोन्मुख थी कि वे लोकमंगल की साधना के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए हैं। इसका सबसे प्रकट प्रमाण तो यही है कि संस्कृत भाषा में पांडित्य के होने के बावजूद उन्होंने अवधी व ब्रजभाषा को साहित्य-रचना के माध्यम के रूप में चुना। जिस प्रकार उनके व्यक्तित्व में भक्त और रचनाकार का द्वंद्व है, उसी प्रकार शास्त्र व लोक का का द्वंद्व भी है : जिसमें संवेदना की दृष्टि से तो लोक की ओर झुके हैं,

भाषा शैली : तुलसीदास का अवधी, संस्कृत, ब्रज आदि विभिन्न भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था, परंतु इनका संपूर्ण काव्य अवधी और ब्रज में है। सरलता, माधुर्य, सहजता और भाव प्रवणता उनकी भाषा की मुख्य विशेषताएँ हैं। तुलसीदास ने दोहा, चौपाई, छंद आदि सभी प्रचलित छंदों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

2020/7/29 16:15

Scanned with CamScanner

परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए साधारण मनुष्य विक्षिप्त
भी हो सकता है, किंतु श्रीराम जीवन में आई इन कठिनाइयों
का मुकाबला धैर्यपूर्वक करते हैं।

8. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच
वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?
→ शोकग्रस्त माहौल में हनुमान जी का अवतरण लक्ष्मण-मूर्छा के
करुण रस के वातावरण में हनुमान जी का अवतरण लक्ष्मण-
मूर्छा के करुण रस के वातावरण में हनुमान जी द्वारा संजीवनी
बूटी लाने के लिए हिमालय पर जाना वीर रस का आविर्भाव
कर देता है। हनुमान जी का यह कार्य उनकी वीरता, शौर्य और
साहस को दर्शाता है। जहाँ लक्ष्मण का मूर्छित होना वातावरण
को संतप्त कर करुण रस की सृष्टि करता है, वहीं हनुमान जी का
रौद्र रूप वीर रस का आविर्भाव करता है।

8. जैहऊँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि विसेष छति नाहीं॥
भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति
कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?
→ "जैहउँ अवध.... छति नाही।" मे भातृशोक मे डूबे राम के इस प्रलाप
वचन में भाई की तुलना में पत्नी का दर्जा कम होने के सामाजिक से
परिपूर्ण थी। उस समय लोगों को सामाजिक प्रतिष्ठा का बहुत ध्यान था।
श्रीराम दृष्टिकोण की ओर संकेत मिलता है। इसमें तुलसीदास जी
ने बताया है कि तत्कालीन परिस्थितियाँ पुरुष प्रधान सामाजिकता
से परिपूर्ण थी। उस समय लोगों को सामाजिक प्रतिष्ठा का बहुत
ध्यान था। श्रीराम जी को भी यही चिंता सता रही थी कि लोग
यह न कहें कि मैंने पत्नी के लिए अपने भाई को खो दिया।
श्रीराम भाई की हानि को स्त्री की अपेक्षा सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत बड़ी हानि मान
रहे थे।

2020/7/29 16:15

Scanned with CamScanner

कवितावली (उत्तर कांड से)
लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप
सोरठा

Q. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

→ कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनमें तुलसीदास जी के ने अपने युग की आर्थिक विषमता व सभी वर्गों पर होने वाले आर्थिक अभाव का वर्णन किया है, उन्होंने श्रम जीवी, किसान, नौकर, दास, भिखारी, भिकारी आदि सभी की आर्थिक रूप से दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। कवि आर्थिक-विषमता का मुख्य कारण तत्कालीन शासन व्यवस्था को मानते हैं। उस समय समाज में वर्ण-भेद, जाति-भेद और धर्म-भेद का बोलबाला था जो इस आर्थिक विषमता की मुख्य जड़ थी, अतः हम कह सकते हैं कि इन्हें अपने समाज की आर्थिक विषमता की अच्छी जानकारी थी।

Q. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है - तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

→ पेट की आग का शमन राम-भक्ति रूपी मेघ ही कर सकता है, गोस्वामी तुलसीदास का यह काव्य-सत्य इस समय का युग-सत्य नहीं है? क्योंकि आजकल केवल मात्र ईश्वर के भरोसे रहकर व्यक्ति आजीविका नहीं कमा